चिड़िया के मोती

सन्तराम वत्स्य

चिड़िया के मोती

सन्तराम वत्स्य

© सुबोध पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली-2

मूल्य : 10.00

प्रकाशक : **पुस्तकायन**, 2/4240 ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002
संस्करण : 1996 **मुद्रक** : जयमाया आफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
CHIDIYA KE MOTI by Santram Vats

एक थी चूं-चूं चिड़िया और एक था काँव-काँव कौआ। चिड़िया को कहीं से मोती मिले और कौए को मिले भुने हुए चने। कौए ने झटपट चने खा लिए। फिर चिड़िया के पास जाकर बोला, 'चिड़िया रानी, जरा अपने मोती तो दिखा।'

चिड़िया बोली, 'ना बाबा ना, मैं नहीं दिखाऊंगी अपने मोती। मेरे मोती लेकर तुम फुर्र से उड़ जाओगे।'

कौआ बोला, 'नहीं जी, मैं क्यों लूंगा तुम्हारे मोती? अभी लौटा दूंगा।

चूं चूं चिड़िया बेचारी भोली थी। उसने मोती कौए को दे दिए। मोती मिलते ही कौआ फुर्र से उड़ गया और पेड़ की डाल पर जा बैठा।

चिड़िया बोली 'कौए-कौए! मेरे मोती दे।' कौआ बोला, 'नहीं देता जा।'

तब चिड़िया पेड़ के पास गई और पेड़-से बोली, 'पेड़-पेड़! इस कौए को अपनी डाल से गिरा दो। इसने मेरे मोती छीन लिए हैं।' पेड़ बोला, 'नहीं गिराता जा।'

तब चिड़िया लकड़हारे के पास गई। बोली, 'भाई लकड़हारे! तुम यह पेड़ काट डालो। इस पर कौआ मेरे मोती लेकर बैठा हुआ है।' लकड़हारा बोला, 'जा, जा... मुझे और भी काम हैं, मैं नहीं काटूंगा पेड़।'

तब चिड़िया राजा के पास गई और बोली, 'राजा, लकड़हारे को बुलाकर उसके कान खींचो। वह पेड़ नहीं काटता जिस पर कौआ मेरे मोती लेकर बैठा है।' राजा बोला, 'जा-जा, बड़ी आई मोतियों वाली। मैं नहीं खींचूगा लकड़हारे के कान।'

तब चिड़िया रानी के पास गई और बोली, 'रानी, राजा से रूठ जा।' रानी बोली, 'बड़ी आई मेरे राजा की शिकायत करने वाली। भाग जा यहाँ से'।

तब चिड़िया चूहे के पास गई और बोली, 'चूहे, रानी की साड़ी कुतर।' चूहा बोला, 'नहीं कुतरता, जा।'

तब चिड़िया बिल्ली के पास गई और बोली, 'बिल्ली-बिल्ली! चूहे को खा।' बिल्ली बोली, 'नहीं खाती जा।'

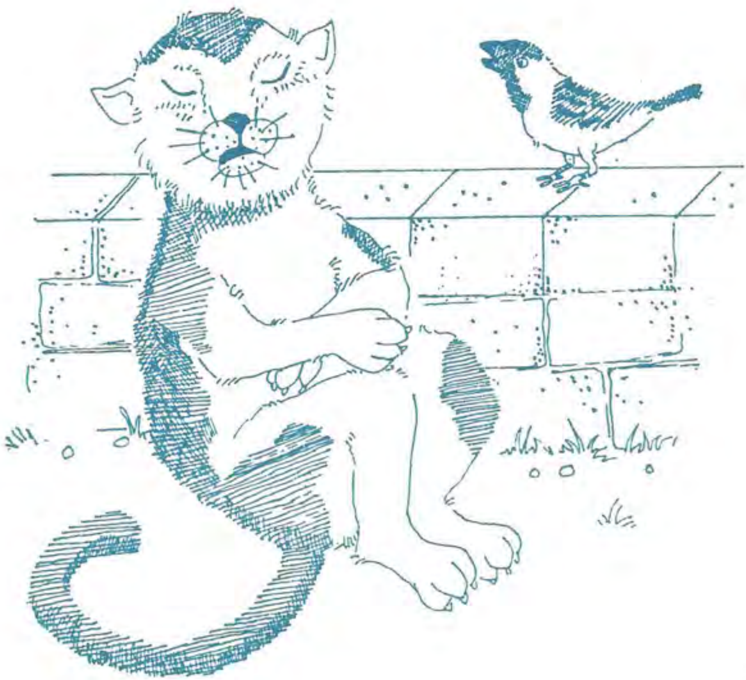

चिड़िया कुत्ते के पास गई और बोली, 'कुत्ते, बिल्ली को काट।' कुत्ता बोला, 'नहीं काटता जा।'

फिर चिड़िया डंडे के पास गई और बोली, 'डंडे-डंडे ! कुत्ते को पीट।' डंडा बोला, 'नहीं पीटता जा।'

तब चिड़िया आग के पास गई और बोली, 'आग-आग'! डंडे को जला।' आग बोली, 'नहीं जलाती जा।'

तब चिड़िया पानी के पास गई और बोली, 'पानी-पानी! तू आग को बुझा।' पानी बोला, 'जा-जा, मैं नहीं बुझाऊंगा।'

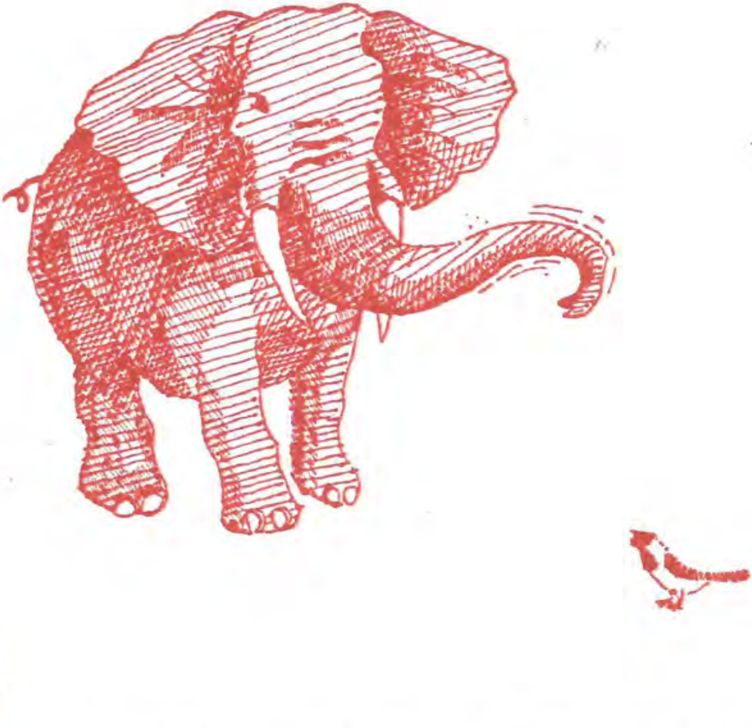

तब चिड़िया हाथी के पास गई और बोली, 'हाथी-हाथी! तू सारा पानी सूंड में भर ले। हाथी बोला, 'अरी जा, मैं क्यों भरूं सारा पानी सूंड में!'

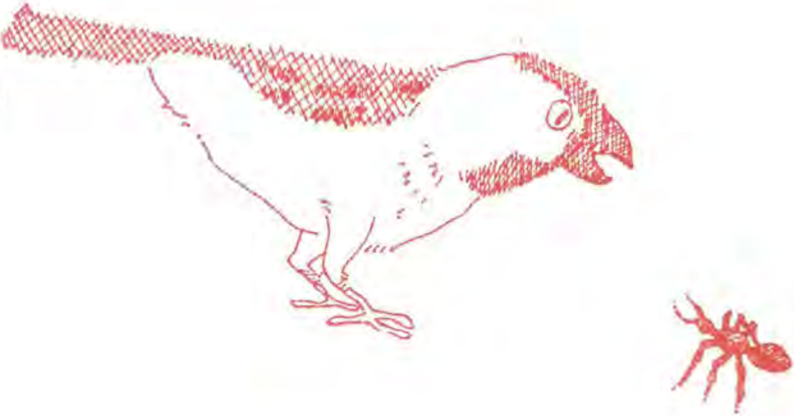

इस बार चिड़िया चींटी के पास गई और बोली, 'चीटीं-चींटी! तू हाथी की सूंड में घुस जा। वह पानी को सूंड मे नहीं भरता, पानी आग को नहीं बुझाता, आग डंडे को नहीं जलाती, डंडा कुत्ते को नहीं पीटता, कुत्ता बिल्ली को नहीं काटता, बिल्ली चूहे को नहीं खाती, चूहा रानी की साड़ी नहीं कतरता, रानी राजा से नहीं रूठती, राजा लकड़हारे के कान नहीं खींचता, लकड़हारा वह पेड़ नहीं काटता, जिस पर कौआ मेरे मोती लेकर बैठा है।' चींटी ने चिड़िया की सारी बात सुनी और धीरे से बोली 'बहन, मैं तेरी बात जरूर मानूंगी।'

फिर क्या था! चींटी गई हाथी के पास और उसे डराकर बोली, 'मैं लगी हूं घुसने तेरी सूंड में।'

हाथी यह सुनकर डर गया। कांपता हुआ बोला, 'मेरी सूंड में मत घुसो, चींटी रानी,अभी सूंड में पानी भरता हूं।'

पानी ने यह सुना तो डर के बोला, 'अरे भाई ऐसा मत करना। मैं अभी आग को बुझा देता हूं।'

आग बोली, 'छोड़ो जी, झगड़ा क्यों करते हो। मैं ही डंडे को जला देती हूं।'

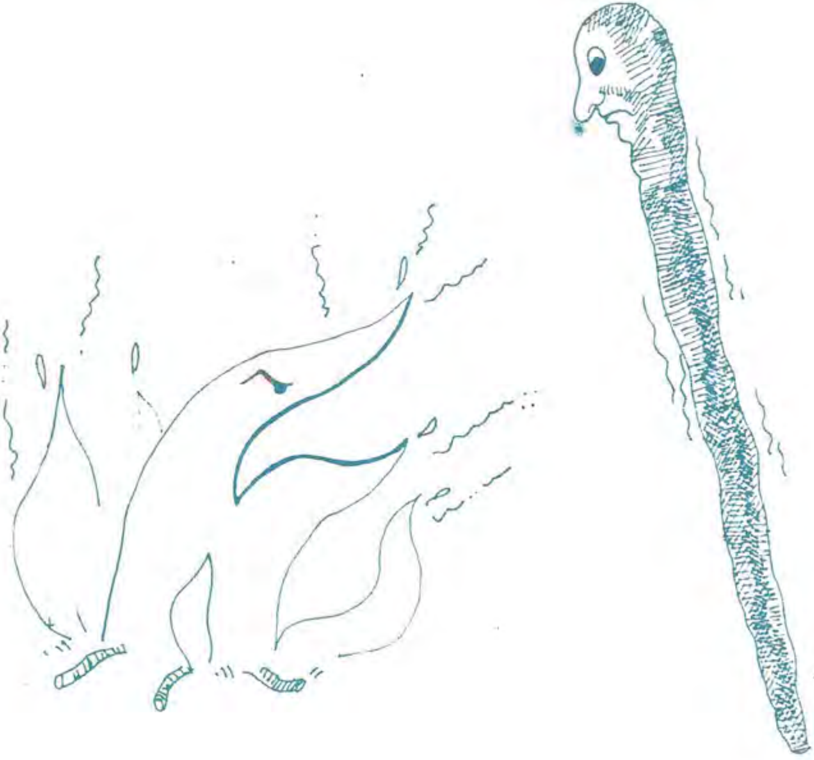

डंडा बोला, 'लो जी, मैं कुत्ते को पीट देता हूं।
अब तो खुश हो।'

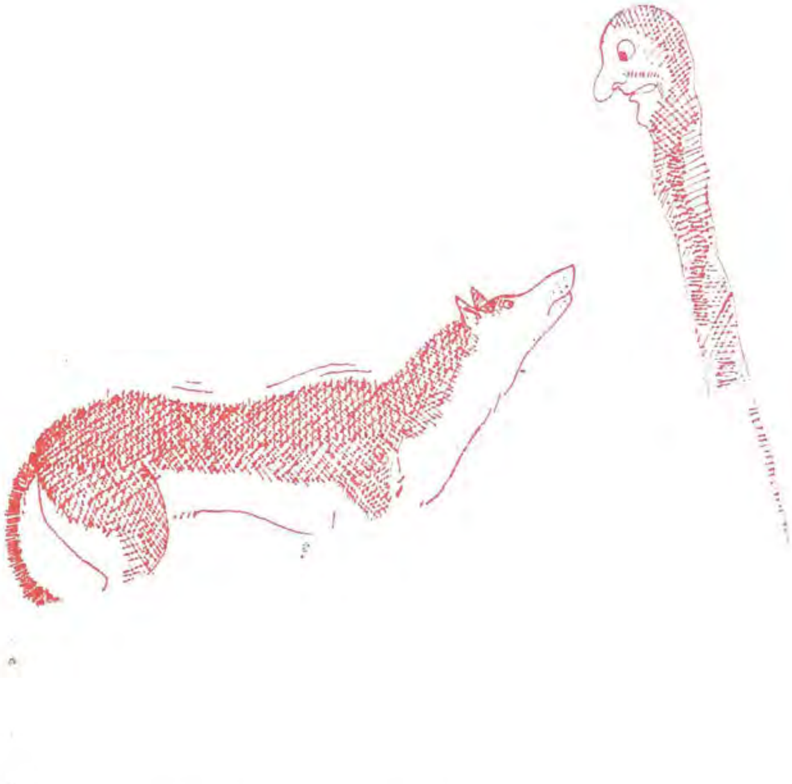

कुत्ता बोला, 'मुझे क्यों पीटते हो, मैं बिल्ली को अभी काटता हूं। अब तो ठीक है न।'

बिल्ली बोली, 'अजी माफ करो कुत्ते भाई! मैं अभी चूहे को खाती हूं।'

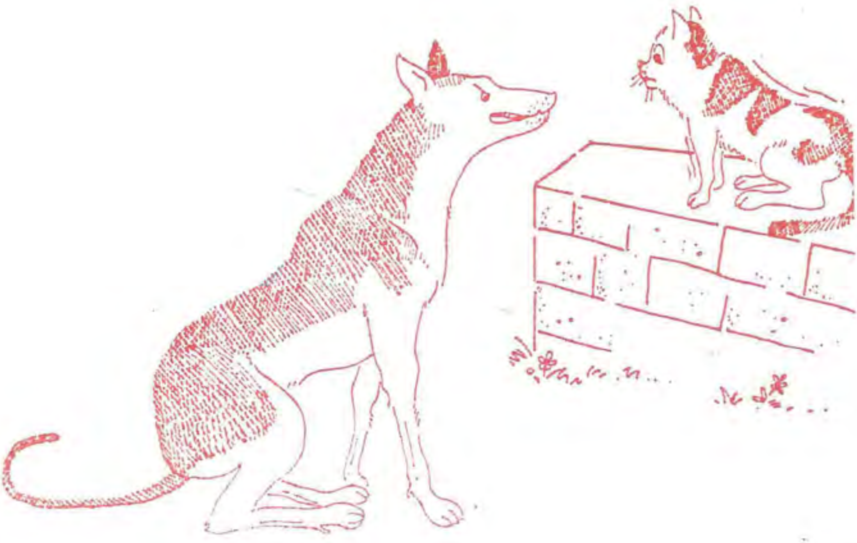

चूहा बोला, 'न बाबा न, बिल्ली मौसी दूर रहो। मैं अभी जाकर रानी की साड़ी को कुतरता हूं।'

रानी ने तीखे दाँत वाले चूहे को देखा तो बोली, 'मेरी साड़ी मत कुतरो चूहे जी! मैं अभी राजा से रूठती हूं।'

राजा बोला, 'रानी-रानी! तुम मुझसे मत रूठो। मैं अभी लकड़हारे को बुलवाकर उसके कान खींचता हूं।'

तभी डर से थर-थर कांपता हुआ लकड़हारा बोला, 'मैं अभी उस पेड़ को काट देता हूं, जिस पर चिड़िया के मोती लेकर कौआ बैठा है।'

पेड़ बोला, 'मुझे मत काटो, मैं एक हरा-भरा पेड़ हूं। सबको छाया देता हूं। मैं ही कोए को गिरा देता हूं। तब तो ठीक है न?'

अब कौए को पता चला कि सब उसे चोर समझ रहे हैं, तो वह झटपट चिड़िया के पास गया और उसके सारे मोती उसको लौटा दिए।

चिड़िया खुश होकर गाने लगी।